FOLLOW THE GOLDEN RULE

80/100 मार्क्स के सर्वश्रेष्ठ नियम

EXCELLENT RULES OF 80/100 MARKS

"Learn to earn Golden Marks."

—Dr. RAM BAJAJ

"Do not study hard but study hardly".

—Dr. RAM BAJAJ

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अच्छी योजना से अच्छे अंक आएंगे ही।

—डा. राम बजाज

नम्बरों की प्लानिंग

अपने अध्ययन, समय और प्रयोगों में तालमेल बिठाने की आदत को कहते हैं—नम्बरों की प्लानिंग। नम्बरों की प्लानिंग हमेशा किसी खास मकसद और लक्ष्य को हासिल करने के लिए की जाती है।

नम्बरों (मार्क्स) की प्लानिंग का सबसे अहम पहलू यह होता है कि आप जिन्दगी के चाहे–अनचाहे हर हालात से परीक्षा में (इम्तहान में) अच्छे अंकों को हासिल करने की तैयारी करते हैं। इसके लिए आप सबसे पहले तो उस विषय की तैयारी करते हैं जो आपको ज्यादा अंक हासिल करवा सके। इससे

आपके अन्दर (Confidence Level) बढ़ जाता है तथा साथ में आप उन विषयों की भी तैयारी करते हैं जिन्हें आप प्लान नहीं कर सकते। इन खास हालात के अलावा मार्क्स के लिए प्लानिंग का मकसद 80/100 से भी अधिक मार्क्स पाने की ललक और उस पर विभिन्न प्रयोगों के परिणाम।

मार्क्स के लिए प्लानिंग का मतलब अधिक पढ़ना बिल्कुल भी नहीं है। कम पढ़ाई में ज्यादा याददास्त और फिर परीक्षा के लिए विभिन्न मार्क्स हासिल करने के लिए प्लानिंग। किस प्रश्न अथवा विषय या चैप्टर की तैयारी में ज्यादा मार्क्स कैसे हासिल हो? प्लानिंग का यह मतलब कतई नहीं है कि आप सिर्फ पढ़ें और पढ़ें। बल्कि यह है कि कैसें पढ़ें, कब पढ़ें और कितना पढ़ें? बस, यही नम्बरों की प्लानिंग होती है।

1. दरअसल यह महत्त्वपूर्ण नहीं होता कि आप कितनी कड़ी मेहनत करते हैं। बल्कि महत्त्वपूर्ण तो यह होता है कि आप कितनी बुद्धिमानी या स्मार्ट तरीके से मेहनत करते हैं।

2. 80/100 मार्क्स का लक्ष्य बनाना और अपनी प्रगति की जाँच करना जरूरी है। क्योंकि अन्तिम विश्लेषण (Analysis) इम्तिहान में महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आपका इनपुट (Input) क्या है, बल्कि यह है कि आपके आउटपुट (Output) मार्क्स कितने हैं। यानी महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि आप कितनी मेहनत कर रहे हैं, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि आप कितने (सफल) मार्क्स प्राप्त कर रहे हैं।

   80/100 मार्क्स का लक्ष्य बनाना बहुत ही आसान है। आपको पहले तो यथार्थवादी ढंग से यह तय करना है कि आप हर हफ्ते कितना पढ़ना चाहते हो और फिर गणित की भाषा में यह तय करना है कि हर हफ्ते किस विषय पर कितना समय पढ़कर–क्या लक्ष्य प्राप्त करना है।

3. समय आपके पास जीवन का सिक्का है। यह आपके पास इकलौता सिक्का है जिसे आप ही तय कर सकते हैं कि इसे कैसे खर्च किया जावे।

4. व्यस्त होना काफी नहीं है। सवाल यह है कि आपस किस काम में व्यस्त हैं?

5. पढ़ाई/अध्ययन के लम्बे घंटे महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, महत्त्वपूर्ण यह है कि वे ठोस और सघन कितने हैं?

6. ज्यादा सफल तो वह विद्यार्थी होता है जिसका लक्ष्य दिन में आठ प्रैक्टिकल करना है।

   दोनों में फर्क सिर्फ इतना है कि पहला स्टूडेण्ट समय की मात्रा को महत्त्वपूर्ण मानता है जबकि दूसरा प्रैक्टिकल की गुणवत्ता को। और इसी से उनकी मार्क्स की सफलता में जबरदस्त फर्क पड़ता है।

7. समय की रेत पर कदमों के निशान बैठ कर नहीं बनाये जा सकते। बेहतरीन लक्ष्यों और योजनाओं के बावजूद आप असफल हो जाते हैं, क्योंकि आप रेत पर बैठ कर कदमों के निशान देखना चाहते हैं। बिना मेहनत कोई भी आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त नहीं कर सकता। मेहनत से जी चुराना, काम टालना, मूड न होने का बहाना बनाना, समय या संसाधन की कमी का तर्क यानी काम करने के अलावा सब–कुछ करते हैं। इनसान को अपने मूड का दास नहीं, बल्कि उसका मालिक (स्वामी) होना चाहिए।

8. बुरी खबर यह है कि समय उड़ता है। अच्छी खबर यह है कि आप इसके पायलेट हैं। **—माइकल आल्थ सुलर**

9. याद करने की सच्ची कला ध्यान देना है, प्रैक्टिकल करना है।

10. याददाश्त और धीमेपन में एक छुपा रिश्ता है, उसी तरह जैसे गति और भूलने में।

11. संग्रह (Collection) और वितरण (Distribution) याददाश्त के दो कार्यालय हैं।

अध्ययन की कला एक सरल रेखा
की तरह नहीं चलती।

—डा. राम बजाज

सूक्ष्म अध्ययन (Micro Study) ही
भविष्य का मानचित्र होता है।

—डा. राम बजाज

वर्तमान (Present) के लिए खुद को भविष्य (Future) बनाओ।

—डा. राम बजाज

बारहवीं (10+2) के पहले और उसके बाद विद्यार्थियों को एक ही सवाल परेशान करता रहता है कि अब ऐसे किस ढंग से अध्ययन करें कि कम से कम 80/100 मार्क्स हासिल हो जाएँ और जिन्दगी की गाड़ी सही पटरी पर आ जाए? दरअसल इस स्थिति से निकलने में वे खुद ही अपनी मदद कर सकते हैं। स्टूडेण्ट चाहे मेडिकल, इंजीनियरिंग, एम.बी.ए., सी.ए., लॉ वगैरह का है या बारहवीं के पहले या बाद का विद्यार्थी, आपको तो सिर्फ एक ही बात पर ध्यान करना है और वह है याद करने की **सच्ची कला।** जगजाहिर–सी बात है कि इन किताबों के अध्ययन के तरीकों व नियमों के नतीजों पर ही बहुत–कुछ यह भी निर्भर करेगा कि परीक्षाफल के नतीजों की दशा और दिशा क्या होगी?

वर्तमान दौर सर्वश्रेष्ठ का है। विद्यार्थी–जीवन की इस दौड़ में सबसे आगे निकलने के लिए समय और अध्ययन का आदर्शतम उपयोग जरूरी हो गया है, वरना हम पिछड़ जायेंगे। जीवन में शिक्षा का महत्त्व और उच्चतम अंकों से प्राप्त शिक्षा का महत्त्व सदियों से हम देखते और महसूस करते आ रहे हैं, लेकिन समय के साथ हुए बदलाव ने सभी को यह जता दिया है कि पारम्परिक शिक्षा पद्धति को अपनाएंगे तो लक्ष्य को भेदना तो दूर; उसके आस–पास भी नहीं पहुँच पायेंगे। प्रतियोगिता के इस युग में असाधारण कामयाबी पाना वास्तव में इतना कठिन नहीं है जितना हम सोचते हैं। ध्यान रखें कि स्टूडेण्ट्स की प्रतिभा और अध्ययन के तरीके ही जिन्दगी को किसी भी ऊँचाई तक पहुँचा सकते हैं।

80/100 मार्क्स के अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ नियम नम्बर—1

EXCELENT RULE NUMBER ONE—FOR 80/100 MARKS

80 मार्क्स—100 मिनट—एक अध्याय

80/100 प्रतिशत मार्क्स का नियम समय और अंकों में अधिकतम अंक हासिल करने का एक बेजोड़ नमूना है। क्योंकि इसके जानने के बाद हम किसी भी अध्याय के लिए एक निर्धारित सीमा के अन्दर ही अध्ययन करते हैं। इस नियम के अनुसार 100 मिनट का एक अध्याय या चैप्टर पर अध्ययन आपको 80 प्रतिशत अंक प्राप्त कराएगा। 80 प्रतिशत परिणाम के

लिए कम से कम और ज्यादा से ज्यादा आपको 100 मिनट का अध्ययन करना पड़ेगा।

यह नियम आपको अप्रत्यक्ष रूप से परफेक्शन के प्रति भी सावधान करता है। 80/100 मार्क्स का नियम हमें बतलाता है कि 80 मार्क्स के लिए हमें सिर्फ और सिर्फ 100 मिनट के अध्ययन की आवश्यकता है। बाकि 20 मार्क्स हैं जिनके लिए हमें कड़ी मेहनत करने के बावजूद उस अध्याय में श्रेष्ठतम अंकों के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। इस नियम को आजमाकर देखें। आप जान जाएंगे कि आप सिर्फ 80 मार्क्स के लिए 100 मिनट की ही कड़ी मेहनत कर रहे हैं। आप भी उन स्टूडेण्ट्स में शामिल हो जाइये जो अपने 80 मार्क्स के लिए प्रत्येक चैप्टर के अध्ययन का नियम 100 मिनट के मिशन को बना लेते हैं, और कुछ असाधारण कर दिखाते हैं। 80/100 मार्क्स के नियम को कला की दृष्टि से विकसित करें, जिसे हर आम विद्यार्थी कर सकता है। नवयुवक इनसान इन मार्क्स के लिए भटकता इसलिए है कि उसे सही दिशा दिखाने वाला मिलता ही नहीं है। क्योंकि नसीब के नाम पर बैठ कर विद्यार्थी जीवन को दुःखी करता है। नसीब सिर्फ कोरी कल्पना है। एक चैप्टर के लिए 100 मिनट की मेहनत अनिवार्य है। 100 मिनट का संकल्प मन में होता है। मन मस्तिक को आदेश देता है। मस्तिष्क विभिन्न ख्वाबों को प्रेरित करता है। आत्मविश्वास, इच्छाशक्ति के बल पर 80 मार्क्स पाने में बिल्कुल भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। निकम्मापन जिन्दगी को उसी तरह खा जाता है जैसे लोहे को जंग। 100 मिनट के संकल्प में नकल नहीं, अक्ल की आवश्यकता है।

लर्निंग प्रक्रिया का मूल्य प्रैक्टिकल प्रक्रिया से ही बढ़ता है।

—डा. राम बजाज

नकल में अक्ल : बन्दर के भी दादा होते हैं।

MONKIES HAVE ALSO THEIR GRAND FATHERS.

कहानी पुराने जमाने की है, परन्तु सीख देती है कि नकल हर वक्त अक्ल का काम नहीं करती—कुछ बदलाव भी चाहिए। एक टोपी बेचने वाला जंगल से गुजर रहा था तो थोड़ा आराम करने के लिए एक पेड़ के नीचे अपनी टोपियों का टोकरा रख कर लेट गया और

जरा–सी देर में उसे नींद आ गई। आँख खुली तो देखा कि टोकरा खाली था और यकायक जब उसकी नजर ऊपर गई तो देखा कि पेड़ की शाखाओं पर ढेर–सारे बन्दर सिर पर टोपियाँ लगाए बैठे हैं।

चिंता में डूबे इनसान ने जब अपनी टोपी हाथ में ली तो सभी बन्दरों ने उसकी नकल करते हुए अपनी–अपनी टोपियाँ हाथ में ले लीं। फिर उसने सिर खुजलाया तो बन्दरों ने भी वैसा ही किया। यह देख उसे आइडिया सूझा और चुटकी बजाकर अपनी टोपी सिर से उतार कर जोर से जमीन पर दे मारी। बन्दरों ने भी आव देखा ना ताव, फौरन सारी टोपियाँ, जमीन पर दे मारीं। टोपी वाला भी खुशी–खुशी से अपनी अक्लमन्दी पर गर्व करते हुए सारी टोपियाँ इकट्ठा करके चल दिया।

पचास साल बाद उसी टोपी बेचने वाले का पोता आदू उसी जंगल से निकला और आराम करने के लिए उसी पेड़ के नीचे लेटा और नींद आ गई। आँख खुली तो सभी टोपियाँ गायब! अपने दादा के साथ घटी ऐसी घटना याद आ गई और उसी ट्रिक से सिर खुजलाया, टोपी उतारी। स्वाभाविक तौर पर बन्दरों ने भी वैसा ही किया। तब उसने अपनी टोपी उतारी और जमीन पर जोर से दे मारी। अरे, यह यह..... क्या.....? बन्दरों ने एक भी टोपी नीचे नहीं फेंकी। सारे बन्दर एक–दूसरे को देख कर, मुस्करा कर हाथ मिला रहे थे। तभी एक बन्दर पेड़ से नीचे उतरा और टोपी वाले पोते को एक जोरदार थप्पड़ जमाया और कहा, मूर्ख! तुम क्या सोचते हो कि सिर्फ तुम्हारे ही दादा ने तुम्हें यह कहानी सुनाई थी? और सुनो, नकल में हर वक्त अक्ल काम नहीं करती।

टोपी वाला पोता आदू सोच में पड़ गया और तुरन्त उसके दिमाग में एक बिजली कौंधी। उस बन्दर से पूछा कि इसका कोई उपाय ?

हाँ एक है—उस बन्दर ने जवाब दिया।

वह क्या है—टोपी वाले पोते ने पूछा।

प्यार से टोपी उतार कर, जमीन पर तहजीब से रख कर, बन्दरों को सलाम करो—बन्दर ने नम्रता से दो लफ्जों में कहा।

टोपी वाले पोते ने ऐसा ही किया। पलक झपकते ही सारी टोपियाँ बन्दरों ने नीचे फेंक दीं। सभी बन्दरों ने पोते आदू को सलाम की मुद्रा में विदा किया।

कुदरत ने आदमी को कितनी ही नियामतें बख्शी हैं। वन्य जीव उनमें से एक है। प्रकृति बिना वन्य जीवों के सूनी होती। ये मूक जानवर भी हमें बड़ी से बड़ी शिक्षा दे जाते हैं—परन्तु इनसान आखिर इनसान ही है कि इनका वध करने में बिल्कुल ही नहीं हिचकिचाता।

याद रखें कि नकल के दायरे में रह कर किसी इम्तिहान को पास तो किया जा सकता है, परन्तु इतिहास नहीं रचा जा सकता। समझदार इनसान और उत्कृष्टता की तरफ ध्यान देने वाले विद्यार्थी पूरी नकल की हरकत तो हरगिज नहीं करेगा। लकीर का फकीर के सिद्धान्त पर चलने वाला इनसान कभी कामयाबी की ऊँची सीढ़ी नहीं चढ़ सकता। हाँ, पहली सीढ़ी पर भले ही चढ़ कर बैठा जा सकता है। वक्त बहुत तेजी से गुजर जाता है, घटनाएँ भी तेजी से घटित होती हैं। समय की रेत पर रह जाते हैं तो केवल कुछ निशान। अगर उजली सोच की स्वच्छ लहरें मन के किनारे न छुएँ तो संभव है कि साधारण–से निशान गहरे होकर अमिट हो जाएँ। बन्दरों के नम्रता–भरे लफ्जों ने इनसान की आँखें खोल दीं। दरअसल, जिन्दगी एक ऐसी किताब है जो अक्षर–अक्षर बनती है और बदलती है। फिर भी एक ऐसा पन्ना आता है जब जिन्दगी की जागती रातों का अक्षर–अक्षर एहसास होता है और यही सफलता उसकी चेतना का मुकाम पा जाती है। आजाद आदमी के अन्दर कुछ सोचने, फैसला करने और अपने फैसले पर अमल करने की दिलेरी होती है जबकि नकल करने वाला इनसान यह दिलेरी खो चुका है। वह हमेशा दूसरों के विचारों को अपनाता है और घिसे–पिटे रास्ते पर चलता है। नए तरीकों से काम करने की ललक ही जिन्दगी में 80/100 मार्क्स की तैयारी का संकेत होता है। परिस्थितियाँ ही चुनौतियों को स्वीकार करने की अहम शक्तियाँ देती हैं। 80/100 मार्क्स का गुर जानने वाले के लिए विद्या का द्वार हमेशा खुला रहता है।

आधा–अधूरा ज्ञान अकसर डराता है।

—डा. राम बजाज

परिस्थितियाँ बनाती हैं मजबूत
CONDITIONS MAKES A MAN TOUGH & STRONG

इस बार गेहूँ और जीरे की फसल बहुत ही बम्पर हुई, पर जब फसल काटी गई तो किसान को आश्चर्य हुआ। फसल में गेहूँ और जीरा नहीं, केवल छिलके थे। किसान ने परेशान होकर एक कृषि विशेषज्ञ को खेत में बुला कर पूछा—मुझे समझ में नहीं आ रहा, मैंने तो हर कोशिश की और पौधों पर फव्वारा पद्धति से ज्यादा से ज्यादा पानी को बरसाये रखा, फिर गेहूँ और जीरे के दानों का क्या हुआ?'

कृषि विशेषज्ञ बोला, तुमने ज्यादा पानी की सिंचाई के चक्कर में उन चुनौतियों को भी टाल दिया, जिनसे गेहूँ और जीरे का विकास होता है। अच्छी धान की पैदावार के लिए फसल को विपरीत परिस्थितियों की जरूरत पड़ती है जिनसे उनका विकास होता है।

किसान की समझ में आ गया कि अच्छी सुविधाओं की चाह रखते हुए भी हम उन चुनौतियों की कीमत को समझेंगे जिससे उसका सामना कर, हम मजबूत दाने के रूप में निखरेंगे।

खुद की क्षमताओं पर दृढ़ विश्वास करें। हर इनसान में एक जैसी क्षमता होती है, उसका भरपूर और सही उपयोग करने वाला ही आगे निकलता है। अच्छे मार्क्स की सफलता की सीढ़ी पर आप अधिक ऊँचाई पर इसलिए नहीं हैं क्योंकि उन पर ईश्वर की आपसे ज्यादा कृपा है। आप भी भगवान की नजरों में उतने ही प्रिय और अच्छे हैं जितने की वे। बस फर्क इतना है कि वे अपनी क्षमता का भरपूर और सही इस्तेमाल करने में विश्वास करते हैं और आप नहीं। इस वास्तविकता को अगर आप मानने के लिए तैयार नहीं हैं तो वह आपकी अपनी समस्या है। इस समस्या से आपको ही निबटना होगा और चुनौतियों का सामना दृढ़ इच्छाशक्ति से करना होगा, क्योंकि आप यह सब–कुछ करने में बिल्कुल सक्षम हैं।

ईश्वर ने ही आपको चुनौतियाँ स्वीकार करने की शक्ति दी है।

—डा. राम बजाज

80/100 मार्क्स के अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ नियम—2
EXCELENT RULE NUMBER TWO—FOR 80/100 MARKS

80 मार्क्स—100 घण्टे—एक विषय

80/100 प्रतिशत मार्क्स के नियम नं. 2 के अंतर्गत आपको अपने एक पूरे विषय पर 100 घण्टे का निर्धारित अध्ययन करना अनिवार्य है। 80 प्रतिशत मार्क्स के लिए एक विषय का अध्ययन ज्यादा से ज्यादा 100 घण्टों में सम्पूर्ण करना है। 100 घण्टे अध्ययन का मलतब है—लगभग 8–9 दिनों के बीच में 100 घण्टे की पढ़ाई करनी है। प्रत्येक दिन में आठ घण्टे का अध्ययन मानें तो यह विषय 100 घण्टे की अवधि में पूर्ण अध्ययन कर लें तथा साथ में 100 घण्टे का प्रैक्टिकल करना भी आपके लिए बड़ा अहमियत रखेगा। हाथों से प्रयोग करने से ही याददाश्त की इन्द्रियाँ इस विषय पर 75 प्रतिशत याददाश्त आपके दिमाग में बनाए रखती हैं। बाकी 25 प्रतिशत पढ़ने, सुनने, देखने और कहने से रखी जा सकती है।

कठिन परिश्रम और ज्यादा स्टडी का मतलब यह कतई नहीं है कि बाकी सब–कुछ छोड़ दें। अपनी कमजोरी और अपनी ताकत, दोनों पर काम करें। अच्छे संस्थान और पढ़ाई–सामग्री यकीनन आपकी मदद करेगी, मगर सफलता की गारंटी नहीं। कोचिंग जाना चाहें तो जाएँ, परन्तु याद रखें कि स्वयं के अभ्यास से ही सफलता मिलेगी। परिश्रम, प्रैक्टिकल और एक समय–सीमा में पूरी तरह से खुद को तैयार करना होगा। सही तैयारी का मतलब है सर्वश्रेष्ठ पर निशाना साधना, ताकि अगर आप टाप ट्वन्टी (बीस) नहीं भी पा सके तो क्या हुआ, 80/100 मार्क्स पाने में तो सक्षम होंगे ही!

क्या आपको जानकारी है कि पटना में संचालित सुपर थर्टी एक प्रशिक्षण संस्थान है, जो गरीब और वंचित तबके के छात्रों को आई. आई. टी. में प्रवेश की निःशुल्क तैयारी कराता है। इस संस्थान में हर वर्ष 30 छात्रों को दाखिला मिलता है, इनमें से अधिकांश छात्र अपने लक्ष्य को पाने में कामयाब रहते हैं। 30 छात्रों में से 28 छात्रों का चयन एक आश्चर्यजनक परिणाम दर्शाता है। इस अनूठे कार्य में अभयनंद भौतिकशास्त्र (आनर्स) 1977 बैच के आई. पी. एस. अफसर हैं जबकि आनन्दकुमार गणितज्ञ की सेवाओं का ही नतीजा है। हाल ही में जापान की एक संस्था सुपर थर्टी पर डॉक्यूमेन्ट्री बनाने पहुँची है।

लक्ष्य बिना जीवन दिशाहीन नाव है, जिसका कोई भविष्य नहीं। इसलिए मन को दृढ़ बना कर इनसान को अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। नदी की धारा बाढ़ से बहुत अलग होती है। जहाँ धारा में पानी निर्धारित तरीके और मिक्स रास्ते से बहकर दूसरों का भला करता है वहीं बाढ़ में पानी अपनी मर्जी से, बिना तय दिशा के बहने लगता है और दूसरों को नुकसान पहुँचाता है। स्टूडेण्ट के अन्दर जो ऊर्जा है, उसे धारा की तरह बहना चाहिए, जिसकी कोई निर्धारित दिशा और रास्ता हो, जीवन का लक्ष्य हो वरना जीवन के तार व परीक्षाफल आपस में उलझ कर रह जायेंगे। दुःख की बात यह है कि अधिकतर नवयुवकों के तार और परीक्षाफल उलझे हुए–से हैं और उनको अपनी दिशा और दशा के लिए जरूरी है कि इन उलझे हुए परीक्षाफलों को सुलझाया जाए। 80/100 मार्क्स के लक्ष्य का सामना करने के लिए खुद को तैयार कर लें। 80/100 मार्क्स की मुसीबत तभी तक बड़ी रहती है जब तक आप उससे घबराते हैं। 100 घण्टे की एक विषय पर तैयारी जब आप कर लेंगे—80/100 मार्क्स आपको कम नजर आने लगेंगे—आप अपना लक्ष्य 90/100 मार्क्स पर निर्धारित करने की सोचने लग जायेंगे क्योंकि प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती और नए सिरे से 90/100 मार्क्स प्राप्त करने की ललक ही आपको सर्वश्रेष्ठ अंकों की दौड़ में शामिल होने के संकेत देगी।

उस अध्ययन की कीमत ज्यादा नहीं आँकी जा सकती
जिसे भुना सकना असम्भव दिखता हो।

—डा. राम बजाज

12 घण्टों का तर्क

12 घण्टों की कड़ी मेहनत और अध्ययन के बाद इम्तिहान की आशातीत असफलता से निराश युवक ने एक बार प्रेरक इंजीनियर से पूछा, मैं मेहनत से पढ़ाई करने की इच्छा रखता हूँ, 12 घण्टे पढ़ता भी हूँ, मेरे पास आवश्यक अध्ययन की सामग्री भी है। फिर भी मुझे अच्छे नम्बर क्यों नहीं मिलते?

प्रेरक ने निराश युवक से कहा, अध्ययन में मंद उत्साह, क्षण–क्षण में लक्ष्यों में बदलाव; और तय समय सीमा में पढ़ाई पूर्ण नहीं करना,

ठीक उसी तरह असर करता है जिस तरह 100 डिग्री तक गरम पानी तथा बाद में बनी भाप का फर्क ही बड़े से बड़े इनसान को हिला देता है। 100 डिग्री पर बनी भाप की शक्ति का संचय करके सफलता अर्जित की जा सकती है। केवल उबले पानी की भाप से इंजन चलाया नहीं जा सकता। निराश युवक की आँखें खुली की खुली रह गईं।

इनसान का दिमाग अकसर तयशुदा तर्कों, नियमों और 12 घण्टों की पढ़ाई के बीच ही रह जाता है। रूढ़िवादी विचारों वाले स्टूडेण्ट्स तर्कशीलता का पहाड़ इतना ऊँचा कर देते हैं कि नए विचार और तरीकों से अध्ययन पनपने ही नहीं देते और तर्कों की ऊँचाई में दबकर रह जाते हैं। जो 80/100 प्रतिशत मार्क्स का विकल्प हमारे सामने आता है, वह तर्कों के बोझ के बीच में उलटे (विपरीत) नजर आता है। सच्ची बात अन्त में इस बात पर निर्भर हो जाती है कि हम विपरीत विकल्पों पर सोचने के लिए तैयार नहीं हो पाते और हम एक तरफ सोचते हुए उसे नकार देते हैं। आखिर में होता यह है कि हम 80/100 मार्क्स का अवसर गंवा देते हैं।

इनसानों का काम है रुकावट पैदा करना, नकारात्मक सोच और प्रचलित नियमों का हवाला देना। लोगों की राय मिलेगी कि यह बदलाव या यह नया काम हाथ में लेना मूर्खता है। हो सकता है कि वे अपनी पुरानी पद्धति या नियमों या अपने अनुभव से ऐसा कह रहे हों, परन्तु परम्पराओं से हटकर, सर्वथा अलग काम के साथ कुछ कठिनाइयों के बीच में से होकर कामयाबी का रास्ता भी जायेगा। सोचकर आगे बढ़ें कि ज्यादा से ज्यादा क्या होगा? उस स्थिति के लिए खुद को तैयार रखें ओर आगे की और कदम रखकर चलना आरम्भ कर दें—80/100 मार्क्स आपका इंतजार करते मिलेंगे। लेखक इसका जीवंत गवाह है। अंकों से दोस्ती ही आधार कोण बनाती है। आधार कोण (Base Angle) से ही शीर्ष कोण (Top Angle) बनता है। चमत्कार होता नहीं है—किया जाता है। आधी-आधूरी पढ़ाई वाले विद्यार्थी के पास अगर पूरे प्रश्न-पत्र का हल भी सामने हो तो किस काम का ? न ही रातों को दाँव पर लगाकर अंकों से दोस्ती की जा सकती है। हाँ, बगुला पक्षी से आप कुछ सीख ले सकते हैं।

पुस्तकों से बड़ा शिक्षक कोई नहीं हो सकता।

—डा. राम बजाज

चतुराई, संयम और साहस : बगुला पक्षी

पक्षियों में सबसे चतुर माने जाने वाला बगुला शिकार में सफलता के लिए नई–नई तरकीबें आजमाने में माहिर होता है। पानी में घंटों तक एक पैर पर खड़े रहना; पैर को एक सूखी लकड़ी की तरह प्रदर्शित करना, जानवरों की पीठ पर सवारी करना और खेत में हल के पीछे–पीछे दौड़ना उसकी कुछ खास तरकीबें हैं। जहाँ अन्य पक्षी ढूँढ़ो और खाओ नीति अपनाकर अपना पेट भरते हैं, वहीं बगुला इसके लिए सफल तरकीबें आजमाता है। पक्षी विज्ञानी भी मानते हैं कि बगुला हर परिस्थिति में साहस और चतुरता के साथ मुकाबला करता है। जबकि कोकरोच दस दिलों और नीले खून वाला वह आर्थोपेड जीव हर मुश्किल और कठिन परिस्थिति का सामना कर विजेता बनने की क्षमता रखता है। यह लकड़ी और पत्थर तक खा सकता है। जान बचाने के लिए यह उलटा होकर मरने का ढोंग भी करता है। अंडों को कोकून में सुरक्षित कर उन्हें चिपका देने की प्रक्रिया वंश–वृद्धि का अनूठा तरीका है। इनसान कोकरोच से जीवट, संयम और संघर्ष की शिक्षा सीख सकते हैं। अच्छे के लिए बदलाव हमेशा सोच में बदलाव से शुरू होता है भले ही वह बगुला पक्षी या काकरोच ही क्यों ना हो। अक्लमंद काम करने से पहले और मूर्ख काम करने के बाद सोचता है। फर्क सिर्फ सोच में ही है। चौबीस घण्टे जुटे रहने की लगन मत दिखाइए, इस तरह हममें से अनेक अपना आधा समय बरबाद करते हैं, इसलिए पढ़ाई के लिए कम ही घण्टे रखिए, लेकिन ठोस। आपको 80/100 मार्क्स के संकेत मिल चुके हैं, इसलिए बड़ा कदम उठाने से घबराएँ नहीं, क्योंकि आप 80/100 मार्क्स की चौड़ी खाई को दो छोटी छलाँगों से पार नहीं कर सकते।

80/100 मार्क्स के लिए अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ नियम नं. 3

EXCELENT RULE NUMBER THREE—FOR 80/100 MARKS

80 मार्क्स—100 दिन—एक साल का पाठ्यक्रम (Syllabus)

80/100 प्रतिशत मार्क्स के नियम नं. 3 के अनुसार पूर्ण एक साल के पाठयक्रम (Syllabus) पर 100 दिनों के समय का निर्धारित अध्ययन करना अनिवार्य है। 80 प्रतिशत औसतन मार्क्स के लिए सभी विषयों के अध्ययन

की समय–सीमा सिर्फ 100 दिन ही है। पूरे पाठ्यक्रम के अध्ययन में 100 दिन कोई कम सीमा नहीं है। मान लें कि एक क्लास के पूरे पाठ्यक्रम में छः विषयों पर अध्ययन कराया जाता है तो प्रत्येक विषय के 12 दिन के अध्ययन के हिसाब से 100 दिनों के पाठ्यक्रम का अध्ययन आसानी से किया जा सकता है। पूरे वर्ष में 100 दिन का अध्ययन कोई बड़ा अध्ययन नहीं होगा। आप भी उन स्टूडेण्ट्स में शामिल हो जाइये जो अपने औसतन 80 प्रतिशत मार्क्स के लिए प्रत्येक वर्ष कम से कम अथवा ज्यादा से ज्यादा 80 प्रतिशत मार्क्स बड़े सरल ढंग से प्राप्त कर लेते हैं। 80/100 मार्क्स की कला की दृष्टि विकसित करें। जिसे हर आम और साधारण विद्यार्थी भी कर सकता है। विद्यार्थियों के पास पूरे साल में अध्ययन के लिए 100 दिन तो मिलते ही हैं और उनका 80/100 मार्क्स के तीनों नियमों का उपयोग अगर करते हैं, उससे अकसर यह तय होता है कि आप 80/100 मार्क्स की सफलता की राह पर चल रहे हैं। कॉलेज और स्कूल हमारे देश के भविष्य के प्रवेशद्वार हैं जहाँ गंभीरतम अनुशासित और ज्ञान से ओत–प्रोत माहौल और परिवेश की कमी महसूस हो रही है। आज के युवा को पल–पल बदलती परिस्थितियों के कारण अपनी मंजिल को हासिल करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। परन्तु इसके बावजूद भी आज के टीनएजर परिपक्व अंदाज में नजर आते हैं। वर्तमान परिवेश में देखते हैं कि युवाओं में बुद्धि की ललक, गंभीरता और 80/100 मार्क्स की होड़ लगातार बढ़ रही है। वर्तमान स्कूल–कॉलेज शिक्षा; नवयुवकों को 80/100 मार्क्स का आन्तरिक संतोष तो दे नहीं पाती, जिससे उनकी समस्याएँ कम न होकर ज्यादा बढ़ती नजर आ रही हैं इसलिए इन पढ़ाकू नौजवानों के चेहरों पर अच्छे अंकों के अभाव में जीनियस होते हुए भी हताशा की झलक नजर आती है। अच्छे नम्बरों के अभाव में नौकरियाँ नहीं मिलतीं। वे असमाजिक गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं। ऐसे बुद्धियुक्त नौजवानों का स्कूल और कॉलेजों से निकास हो रहा है जिनसे देश के विकास की बात तो हम नहीं करते, बल्कि अपने परिवार, यहाँ तक कि खुद का विकास भी नहीं कर पाते। अच्छी शिक्षा का ध्येय उसका प्रतिफल और अंकों का प्रतिशत यह है कि प्रत्येक नवयुवक के जीवन का एक खास मिशन और विशिष्ट लक्ष्य नहीं बन पाता, जिसके लिए वे जन्म लेते हैं। 80/100 मार्क्स के नियमों का असली मकसद यह है कि उसके इस लक्ष्य और मिशन की खोज में मदद करती है और उसे प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करती है।

80/100 मार्क्स की शुरुआत ही अहम है। 100 मिनट, 100 घण्टे और 100 दिन के अध्ययन से ही ज्ञान प्राप्त होगा, ना कि ढिंढोरा पीटने से। जीवन को अपने इशारे पर चलाने और अपनी सम्पूर्ण महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए आज युवा कटिबद्ध है। उसे चाहिए एक श्रीकृष्ण जैसा मार्गदर्शक अथवा Decoding 80/100 Percent Marks अन्यथा परिणाम कोई बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

आधी–अधूरी योजना, समय–सीमा का अभाव व स्पष्ट लक्ष्य के बिना प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होना असम्भव और मुश्किल है, लेकिन इन मुश्किलों को अपने बलबूते पर आसान किया जा सकता है। यदि एक बार 80/100 मार्क्स प्राप्त करने की कला आ जाए तो समझिए कि आपको प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने से कोई रोक नहीं सकता। अच्छी पुस्तकें वह मार्गदर्शक होती हैं जो इंसान की योग्यता को सही दिशा देने का काम करती हैं। जरा एक आम इनसान की योग्यता, योजना, समय सीमा व लक्ष्य पर नजर डालें।

अध्ययन में ताल नहीं—तालमेल चाहिए।

—डा. राम बजाज

एक साल का राजा : योग्यता, योजना, समय सीमा और स्पष्ट लक्ष्य

ONE YEAR KING : ABILITY, PLANNING, TIME LIMIT & CLEAR TARGET

किसी जमाने में एक ऐसा मुल्क था, जहाँ हर साल के लिए कोई भी मामूली आदमी राजा बन सकता था—परन्तु एक साल बाद उसे रहने के लिए भयानक जंगल में छोड़ दिया जाता था। जहाँ से उसका बचना नामुमकिन होता था तथा फिर नए राजा को एक साल के लिए गद्दी सौंप दी जाती थी। इस साल एक ऐसे नौजवान को राजा बनने के लिए तैयार किया—जो एक तूफानी डूबती नाव के भटकने से इस प्रदेश में पहुँच गया था। नौजवान का नाम आदित्य था, जिसका एक साल के लिए राज्याभिषेक कर दिया गया। राजा आदित्य ने पहले दिन राजा बनते ही अपने वजीरों को निर्देश दिया कि उस खतरनाक जंगल का मुआयना करवाएँ जहाँ उसे एक साल

बाद छोड़ा जायेगा और जहाँ से बच कर आना, किसी भी राजा के लिए सम्भव नहीं हुआ।

सारी स्थिति समझ लेने के बाद उसने एक योजना के तहत, अपनी तय समय-सीमा में पहाड़ी के ऊपर आलीशान महल, बाग-बगीचे, खेती-बाड़ी, वन्यजीवों के संरक्षण के उपाय, पवनचक्की, नदी पार लकड़ी का पुल व एक मन्दिर का भव्य निर्माण करवाया और आम जनता के लिए खोल दिया। महीनों के अन्दर ही उसने ये सारे काम करवा दिए। साथ में अपने प्रदेश की खुशहाली के लिए कच्ची सड़कें, उन्नत खेती-बाड़ी, आयुर्वेदिक वैद्य व हकीम, स्कूली शिक्षा व आश्रम का भी निर्माण करवा दिया। फिर एक दिन अचानक अपने मंत्रियों और जनता को बुला कर इच्छा प्रकट की कि वह अभी से उस जंगल में जाना चाहता है, जहाँ उसे छः महीनों बाद छोड़ा जायेगा। परन्तु जंगल में महलों से भी बेहतर हालात देख कर राजा आदित्य की इस बुद्धिमत्ता से खुश होकर वजीरों ने हाथ जोड़कर आग्रह किया कि राजा आदित्य, हमें आपकी अक्लमन्दी, योजना, समय-सीमा और लक्ष्य पर गर्व है। कृपया आज से आप हमेशा के लिए इस देश के राजा हैं।

लक्ष्य की योजना बनाने का गुर जानने वाले विद्यार्थी, किन्हीं दूसरों की योग्यता पर भरोसा नहीं करता। आने वाली विपदा से डर कर मुँह छिपाने की बजाय, अगर हिम्मत से काम किया जाए, तो विपरीत परिस्थितियाँ भी अपने पक्ष में की जा सकती हैं। परन्तु लोग समस्याओं से घिरने के बाद निराशा के घेरे में भी आ जाते हैं जो समस्या से अधिक खतरनाक है। निराशा के चलते वे अपनी सारी क्षमताओं को भूल बैठते हैं। अपनी योग्यता उन्हें दिखाई नहीं पड़ती।

लक्ष्य और समय-सीमा में सही अनुपात चाहिए।

—डा. राम बजाज

मकड़ी और तितली : संघर्ष, लगन और कारीगरी

अतिसूक्ष्म रेशों से बारिक कारीगरी के साथ जब मकड़ी जाल बुनती है तो उसे देखना एक शानदार अनुभव होता है। अपने से भी बड़े कीटों को जाल में

फंसाने वाली मकड़ी बड़ी लगन से अपना काम करती है। संयम के साथ शिकार करना इसका विशिष्ट गुण है। जबकि तितली के एक छोटी–सी इल्ली से तितली बनने का चक्र अत्यंत जटिल और खतरों से भरा होता है, लेकिन तितली इसे सफलतापूर्वक पूरा करती है। आपका अध्ययन भी संघर्ष, लगन और कारीगरी से भरा होना चाहिए। लगन से किया गया संघर्ष 80/100 मार्क्स के चौराहे पर लाकर खड़ा कर देता है जहाँ से हर रास्ते 80/100 मार्क्स के गलियारे में ही खुलते हैं—इससे छोटा कोई रास्ता नहीं होता।

समय रेत की तरह फिसलता है।

—डा. राम बजाज

80/100 मार्क्स के नियम पर आधारित टाइमटेबल

24 घण्टे का पूर्ण टाइम–टेबल

(1) 8 घण्टे – नींद

(2) 2 घण्टे – नास्ता, लंच, डिनर, चाय, काफी आदि।

(3) 2 घण्टे – टी. वी. सीरियल, टी. वी. न्यूज, अखबार, पत्रिकाएँ, अच्छी पुस्तकें, खेल।

(4) 1 घण्टे – दोस्तों से गपशप—सामाजिक जीवन।

(5) 1 घण्टे – पारिवारिक जीवन—पारिवारिक कार्य।

(6) 7 घण्टे – स्कूल/कोचिंग क्लासेज/कॉलेज/प्रैक्टिकल/ट्यूशन

(7) 2 घण्टे – अध्ययन जिसमें 100 मिनट ही पढ़ना है।

(8) 1 घण्टे – आना–जाना/नहाना/शोच आदि/ब्रेक

कुल 24 घण्टे

80/100 के लक्ष्य को हासिल करने का यह बेहतरीन तरीका है। एक घण्टे का फेरबदल आपके कार्यक्रम के अनुसार—घटाया–बढ़ाया जा सकता है। प्रकृति और स्वभाव के अनुसार हर विद्यार्थी की अपनी–अपनी रुचि को अपनी मंजिल पर पहुँचा देना, मनोबल बढ़ा कर इतनी शक्ति दे देना ही 80/100 मार्क्स की शिक्षा की अन्तिम सीढ़ी है और इस शिक्षा का यह दायित्व भी है।

ऐसा नहीं कर सकने वाली शिक्षा अन्त में जाकर सारे किए–कराए पर पानी फेर देती है।

80/100 मार्क्स में समय के उत्तम उपयोग के लिए पैरेटो का 20/80 का टाइम मैनेजमेंट : 80/100 मार्क्स नियम

पैरेटो के अनुसार आपकी 20 प्रतिशत प्राथमिकताएँ (Priorities) आपको 80 प्रतिशत परिणाम देंगी, बशर्ते आप अपनी शीर्षस्थ (Top) 20 प्रतिशत प्राथमिकताओं पर अपना समय, ऊर्जा, धन और कर्मचारी लगाएँ। कहने का तात्पर्य यही है कि आपके 80 प्रतिशत परिणाम सिर्फ 20 प्रतिशत समय से ही मिलते हैं।

इसका दूसरा मतलब यह भी है कि सिर्फ बाकी बचे 20 प्रतिशत परिणाम हासिल करने के लिए आप अपना 80 प्रतिशत समय खर्च और बर्बाद करते हैं। यह जानकारी तो होनी ही चाहिए कि 20 प्रतिशत परिणामों को हासिल करने में हमारा 80 प्रतिशत समय किन गतिविधियों में खर्च हो रहा है। अध्ययन की योजना व टाइम टेबल बनाते समय पैरेटो के 20/80 के नियम की पालना करने से आपको 80/100 प्रतिशत नम्बर प्राप्त करने में कहीं अड़चन नहीं आयेगी। किसी भी लक्ष्य का पीछा करने में कितना समय व्यतीत हो रहा है ये जानकारियाँ 80/100 मार्क्स के लिए बहुत जरूरी हैं। अकसर ऐसा होता है कि हम अपना अधिकतर समय छोटे–छोटे कामों में लगा देते हैं और सोचते हैं कि उसके बाद महत्त्वपूर्ण अध्याय या विषय पर अध्ययन निबटा लेंगे, जो सरासर गलत साबित होता है। बहरहाल, बाद में जाकर हमें इस दुखःद तथ्य का एहसास होता है कि महत्त्वपूर्ण अध्याय/विषय के लिए हमारे पास समय बचा ही नहीं है। इसलिए ज्यादातर विद्यार्थी अपने दिमाग की ताकत और समय का लगभग 10 प्रतिशत ही इस्तेमाल कर पाते हैं। इसलिए 20 प्रतिशत प्राथमिकताओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करें।

Focus on the Target and Practicals make the student perfect :

चींटी सबसे छोटे स्वपोषित और कामकाजी जीवों में एक है। चींटी की सफलता का मंत्र सभी कामयाबी के सेमीनारों में अकसर सुना जाता है। अपने वजन से कई गुणा अधिक वजन ढोना, चींटी साथियों के साथ ग्रुप बनाकर भोजन ढूँढ़ना और उसे अपने घर तक ले जाने का काम ईमानदारी से करने

वाली चीटियों से हम सीखते हैं—मेहनत, ईमानदारी और चुनौतियाँ लेने का साहस। मात्र कुछ दिनों के जीवन चक्र में चींटियाँ हमेशा अपने निर्धारित काम में जुटी रहती हैं। हर चींटी अपना–अपना काम करती है। जबकि मधुमक्खी उड़ने वाले कीड़ों में मेहनत, कौशल और साहस के अनूठे गुण लिए होती है।

दुनिया में हर इनसान और जीव के अलग–अलग लक्ष्य होते हैं। सबकी सोच और जीवन का फर्क भी होता है। जीवन और सोच के अनुसार ही अपनी प्राथमिकताएँ तय की जाती हैं। भले ही ये जीव चींटी या मधुमक्खी ही क्यों ना हों। सार यह है कि प्राथमिकताएँ यदि सही हैं और आप उनके अनुसार अध्ययन कर रहे हैं तो घटनाएँ जीवन में सही क्रम में घटेंगी और सभी विषयों में संतुलन बना रहेगा। आपके पास एक ही जीवन है, इसे आप यूँ ही बहाने बनाकर गुजार दें या योजना के अनुसार अध्ययन करके 80/100 मार्क्स या उससे भी ऊपर उपलब्धियाँ हासिल कर लें—चुनाव करना आपका काम है।

Practical in Theoratical and Theoritcal in Practical.

—Dr. Ram Bajaj

80/100 मार्क्स के अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ नियम नं.—4
EXCELENT RULE NUMBER FOUR—FOR 80/100 MARKS

80 प्रतिशत मार्क्स के नियम नं. 4 के अनुसार कम से कम 100 प्रैक्टिकल अपने हाथ से करना अनिवार्य है। ऐसा यदि वे करते हैं तो 100 अध्यायों पर उनकी पकड़ 75 प्रतिशत याददास्त के साथ दिमाग में रहती है, जबकि उसी प्रैक्टिकल के साथ अध्ययन क्लास में सुनने अथवा कोचिंग क्लासेज की पढ़ाई के माध्यम से 25 प्रतिशत याददाश्त दिमाग में याद रख सकते हैं और यही मूलमंत्र 80/100 मार्क्स के इस नियम नं. 4 का सारभूत आधार है। किसी भी विषय/अध्याय का अध्ययन प्रैक्टिकलस के माध्यम से किया जा सकता है, जिसका विवरण पिछे लिखे अध्यायों में वर्णित है।

प्रयोग हमें क्यों ज्यादा याददाश्त देता है ?
Why the practical has given us more memory ?

याद या स्मृति के बिना जीवन की कल्पना करना कठिन ही नहीं, अत्यंत मुश्किल है। प्रतिदिन की हजारों अनुभूतियाँ हमारे हर निर्णय का आधार,

हमारी हर आदत, बीते समय का हर अनुभव व किया गया हाथ से प्रयोग, हमारी स्मृति, यानी यादें कहलाती हैं। किसी भी ज्ञान को बार–बार प्रयोग करने के लिए उपलब्ध बनाए रखने की क्षमता ही स्मृति है। किसी भी व्यक्ति या विद्यार्थी की स्मृति का बहुत बड़ा भाग शब्दों या वाक्यों के रूप में होता है। प्रयोगों का अथवा अनुभवों की स्मृति का भाग बहुत थोड़ा होता है। अतः स्मृति या याददाश्त को बड़ा बनाना है तो प्रयोगों के भाग (Division) को बड़ा बनाया जाय, जो हाथों से किए गए प्रयोगों से ही बड़ा बन सकता है। अतः प्रयोग ही एकमात्र उपाय है जो याददाश्त को ज्यादा और बड़ा बनाती है।

वैज्ञानिकों के वर्षों के शोध से पता चला कि कुछ निश्चित सम्पर्क सूत्रों की सहायता से तंत्रिका तंत्र में पाई जाने वाली विशेष तंत्रिका कोशिकाओं, जिन्हें न्यूरॉन कहते हैं—का एक जाल बुना हुआ है अर्थात् हमारी अनुभूतियाँ, स्मृतियाँ तंत्रिका कोशिकाओं में संजोई नहीं जाती, बल्कि इन कोशिकाओं का एक सुचारु रूप से सम्बन्धित जाल तैयार हो जाता है। सूचनाओं को ग्रहण करने के साथ–साथ कोशिकाएँ रूपातंरित हो जाती हैं और धीरे–धीरे सुनिश्चित आकार ग्रहण करती जाती हैं। प्रयोगों से किए गए कार्य/हाथों से किए गए काम से बहुत ही सुन्दर और एक सुचारु रूप से जाल तैयार हो जाता है। वास्तव में हमारी स्मृतियाँ विभिन्न प्रतिदर्शों के संग्रह पर आधारित होती हैं। एक प्रतिदर्श के बहुत–से छोटे–छोटे टुकड़े मिलकर एक स्मृति बनाते हैं। ढेर–सारी स्मृतियों के ढेर–सारे छोटे–छोटे टुकड़े ही स्मृति जालों में बुने रहते हैं। इसीलिए तो प्रयोगों से किए गए अनुसंधान की किसी छोटी बात के याद आते ही हमें पूरी घटना या सम्पूर्ण प्रयोग याद आ जाता है।

सूचनाएँ मूल रूप से मस्तिष्कीय कारेक्स की कोशिकाओं में एकत्रित होती हैं। मस्तिष्क के आधार के दोनों ओर स्थित हिप्पोकैम्पस और उससे सटा हुआ एमिग्डैला मिल कर लिम्बिक तंत्र की रचना करते हैं और यही भाग स्मृतियों को लम्बे समय तक बनाए रखने में सहायक होता है। अगर कोई भी सूचना कुछ सप्ताहों तक बार–बार प्रयोग (Practical) में ली जाती है तो मस्तिष्क के अन्य भागों में भी तंत्रिका बहुत जल्द ही विकसित हो जाती है। अतीत के विभिन्न भागों में सूचनाओं की याददाश्त हमेशा के लिए कांटेक्स के विभिन्न भागों में संगृहीत रहती है। अतः प्रयोग करना अतिआवश्यक है।

अपने सामर्थ्य को पहचानिए, ऐसा कोई विषय नहीं है जिसे प्रैक्टिकल्स द्वारा हल नहीं किया जा सकता है। जो प्रैक्टिकल है वही थ्योरेटिकल है और जो

थ्योरेटिकल है वही प्रैक्टिकल है। किसी भी प्रैक्टिकल को हाथ में लें, उसे पूरे विश्वास के साथ कीजिए। फिर देखिए कि यमराज को भी वापिस जाना पड़ेगा।

जिन्हें समय-प्रबन्धन के गुर आते हैं—उनके लिए
अंकों के द्वार हमेशा के लिए खुल जाते हैं।

—डा. राम बजाज

शान्ति का प्रतीक कबूतर : चमगादड़

एक कबूतर रात में अचानक भटककर एक खंडहर के अन्दर जा पहुँचा और वहाँ बहुत-से चमगादड़ों को उलटा लटकते देख, सहम कर एक कोने में दुबक गया। एक नौजवान चमगादड़ की नजर पड़ते ही वह कबूतर के पास आकर लटक गया और पूछा, कौन हो तुम और यहाँ हमारे सम्राज्य में दखल देने क्यों आये हो? घबराए हुए कबूतर ने हिम्मत जुटा कर कहा, मैं शान्ति और सीधी सोच का प्रतीक कबूतर हूँ। यह सुन कर जवान चमगादड़ जोर से हँसा और चीख-चीख कर बोला, तुम यहाँ बिल्कुल काम के नहीं हो। यहाँ हर कोई उलटा सोचता है और उलटा ही काम करता है। यहाँ तक कि यहाँ राजा, मंत्री और शिक्षक सभी उलटा सोचते हैं और करते हैं। हम सभी निशाचर इस बात से खुश रहते हैं कि सभी की दलीलें, नजरिया और अनुभव एक जैसे उलटे ही हैं। कोई भी निशाचर नया सोचने की कोशिश ही नहीं करता। रात के अंधकार से घिरे हम लोग तो क्या इनसान भी दिशाहीन उलटे होकर चाहे कितनी ही तेज उड़ान भरें, लेकिन कामयाबी की मंजिल तो प्राप्त नहीं की जा सकती।

कबूतर आश्चर्यचकित हुआ। चमगादड़ ने कबूतर की मनःस्थिति भाँपते हुए कहा, चकित न हो शान्ति के दूत कबूतर। सामने उस इमारत को देखो, वहाँ हमारे देश का राजा रहता है—वह भी रातभर हमारी तरह जागता है और दिन में सोता है। नतीजा हमेशा उलटा ही प्राप्त होता है। इतना कहकर चमगादड़ दूसरी जगह जाकर लटक गया। कबूतर ने जैसे-तैसे रात काटी और पौ फटते ही राजा की इमारत और चमगादड़ के साम्राज्य के ऊपर उड़ान भरी। चारों ओर सन्नाटा था। एक चौकीदार आधी नींद में किसी को बता रहा था, राजा और प्रजा अभी दिन में सोए हुए हैं.... रात में ही मिलेंगे।

शान्ति का प्रतीक कबूतर उड़ते-उड़ते सोचने लगा कि प्रगति का रास्ता अंधकार में नहीं, दिन के उजाले से ही होकर गुजरेगा। भले ही देश, लोग या जीवन भिन्न हों, संस्कृति भिन्न हो, शैली भी भिन्न हो, परन्तु जीवन में जीतने के लिए शतरंज का खेल दिन में ही खेला जा सकता है—रातों के अंधेरे में नहीं। पुरानी तहजीब, मर्यादा संस्कार का तो अहम सवाल है ही, परन्तु यह जानने की अहमियत और अधिक बढ़ गई है कि आज का नवयुवक इनसान भटका कहाँ है, बल्कि उसे दिन के उजाले में सही दिशा और अध्ययन के नियम बताने वाला दिखता ही नहीं है। रातों का अध्ययन आपकी परीक्षा का आधार और दिशा तय नहीं कर सकता।

जिस ढंग से यह प्रकृति बनाई है, हमें उनके नियमों का पालन करना चाहिए और यदि हम दूसरी तरफ चलाने वाले बनकर उलटा चलाएंगे यानी प्रकृति के नियमों को तोड़ेंगे, उसूलों को नहीं मानेंगे, तो नुकसान ही उठाना पड़ेगा। चरखा हमेशा सीधा ही चलेगा। उलटा चलाने पर टूट जाता है। उलटा आदमी कितनी दूरी तय कर सकता है—जबाब आपका होगा।

नियमों को दायरे में रख कर अध्ययन तो किया जा सकता है, परन्तु इतिहास नहीं रचा जा सकता।

—डा. राम बजाज

शहर में दंगे अपनी चरम सीमा पर थे। अभी-अभी उसने बड़ी मुश्किल से अपने 8 साल के बेटे को अस्पताल में डाक्टर को दिखाया, जहाँ उसे बेटे का तुरन्त ऑपरेशन करवाने की सलाह दी थी। ऑपरेशन में कम से कम एक लाख का खर्चा था—जिसका इन्तजाम उसे फौरन करना था। वह बहुत ही परेशान था और वह राहत शिविर में पनाह लिए हुए था।

सरकार दंगों में जलाए गए मकानों और मारे गए लोगों को मुआवजे के रूप में तीन-तीन लाख रुपये बाँट रही थी। दंगाइयों से किसी तरह उसका घर और उसमें रह रहा बूढ़ा बाप बच गया था—परन्तु उसका बाप घर नहीं छोड़ने की जिद के कारण वहाँ रह रहा था जबकि उसके मौहल्ले के सभी मकानों में दंगाइयों ने आग लगा दी थी किन्तु उसका मकान और पिता, दोनों सही-सलामत थे।

अगले ही क्षण वह अपने मकान और पिता के सामने था। अचानक उसके दिमाग में जहरीली नागिन–सी विचार की एक अभद्र रेखा रेंगने लगी। अगर बूढ़ा बाप कुछ समय पहले चला जाता है तो क्या फर्क पड़ता है? किन्तु उसके और अपने बेटे के सामने तो पूरा जीवन बाकी है। हाँ, ठीक ही तो है। रात के अंधेरे में कौन देखता है? किन्तु क्या यह एक बेटे का फर्ज होगा ? मैं दंगाई बनकर अपने पिता और मकान को आग की लपटों में झोंक दूँ? उलझ गया वह अपने विचारों में। एक तरफ उसका पिता, जिसने उसको जन्म दिया था और दूसरी तरफ उसका इकलौता आठ साल का बेटा, जिसने उससे जन्म पाया था। उन दोनों में से एक को चुनना था। विचारों के भंवर में वह फंस गया—उसे एक निर्णय लेना था। उसके चेहरे पर एक जालिम हँसी उभरने वाली थी क्योंकि वह एक फैसला कर ही चुका था—उससे पहले ही उसका बाप स्थिति को भाँप कर चिल्लाया ..... नहीं, नहीं बेटा, ऐसा हरगिज मत करना ....। इसलिए नहीं चिल्ला रहा हूँ कि मैं मरने से डरता हूँ, बल्कि इसलिए गिड़गिड़ा रहा हूँ कि यह घिनौना काम अगर तुमने अपने हाथ से कर दिया तो दुनिया में बाप–बेटे का रिश्ता ही समाप्त हो जायेगा। सम्बन्धों की डिक्शनरी में माँ–बाप एक ऐसी विभूति है जिसको पूजा जाये उतना ही कम है। इनका इस तरह तिरस्कार—दुनिया को काली–अंधेरी खाई में धकेल देगा। माँ–बाप एक ऐसा इनसानी जज्बा है जहाँ त्याग सर्वोपरि है और उसके परिवार की खुशियाँ सबसे महत्त्वपूर्ण। घिनौने चरित्र की यह चूक ऐसी है कि इससे दाग लग गया तो उसको साफ करने का जल (पानी) इस दुनिया में तो उपलब्ध नहीं होगा। बेटा, आज के लिए रुक जाओ परन्तु कल मेरे से मिलने जरूर आना।

अगले दिन समाचार मिला कि दंगाइयों ने बाकी बचे मकान में एक बूढ़े इनसान सहित रात को आग लगा दी। उसका बेटा सुन कर सन्न रह गया। उसे तीन लाख का मुआवजा मिला। आठ साल का बेटा स्वस्थ हो गया। असल में बूढ़े बाप ने स्वयं के हाथों से आग लगाकर—कहीं दूर, कहीं दूसरे–दूसरे प्रदेश में एक वृद्ध आश्रम

खोलकर—बाप–बेटों के टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने का बीड़ा उठा रखा था। समय ने करवट ली। प्रशंसनीय कार्य से प्रभावित होकर सरकार ने बूढ़े बाप को सम्मानित किया और वृद्ध आश्रम के विस्तार के लिए व्यापक धनराशि का योगदान दिया। अखबार में तस्वीर और समाचार पढ़ कर उसके बेटे की आँखों से आँसुओं की धारा बह पड़ी। तुरन्त उस वृद्ध आश्रम जाकर अपने बाप के चरणों में गिर पड़ा। अनायस ही उसके मुँह से निकल गया, पिताजी, मुझे माफ करें। मैंने माँ–बाप के रिश्तों को समझने में बड़ी–भारी भूल और गलती की है जिसका खामियाजा तो मुझे इस जन्म में भुगतना ही पड़ेगा। मैं समझ नहीं सका कि घर–गृहस्थी की गणित के सम्बन्धों का एक–एक सवाल बड़ी सूझबूझ से हल करना होता है। कब कहाँ चूक हो जाए और सम्बन्धों का जोड़ सिफर (जीरो) हो जावे .... कहा नहीं जा सकता। आज समाज जिस परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है उसके बारे में सभी चिन्तित तो हैं, किन्तु परिवर्तन की दिशा को बदलने की क्षमता किसी में भी नहीं है। आपने रास्ता दिखाकर परिवर्तन की दिशा बदलने की क्षमता और इच्छाशक्ति दिखाई, पापा यह बहुत बड़ी बात है। मुझे माफ कर दें।

नई पीढ़ी में, पुरानी पीढ़ी के लिए उपेक्षा के भाव हैं तो पुरानी पीढ़ी में नई पीढ़ी के प्रति वात्सल्य भाव नहीं हैं। अतः कोई भी रिश्ता कितना भी मजबूत क्यों न हो—सम्बन्धों के अभाव में दम तोड़ देता है। यद्यपि बेटे को यह मानना चाहिए कि अनुभव ज्ञान से ज्यादा कीमती होता है। ज्ञान पुस्तकों से मिलता है और अनुभव जीवन से। याद रखें, किसी वृद्ध माँ–बाप को बूढ़ा जानकर मत छोड़ देना, उनकी एक–एक झुर्री में अनुभव के मोतियों की लड़ी है। आज का बेटा—कल बाप के द्वारा किए श्रम का नतीजा है। बचपन के जीवन का कड़वा सच यह है कि जिन सीढ़ियों पर चढ़ कर बुलन्दियों तक पहुँचाया है— क्या वहाँ इतनी अधिक ऊँचाई है कि हमें पहली सीढ़ी, यानी अपने माँ–बाप बहुत धुंधले दिखने लग गए हैं या फिर दिखते ही नहीं? आज का इनसान अपनी जड़ों से दूर होकर अपने कर्तव्यों को निभाने में जान बूझकर चूक कर रहा है। आप भूल रहे हैं तो हम याद दिला दें कि जिस मकान, भावनाओं और आदर्शों को आपने आग लगाने की ठान ली—कल वह आग आप तक भी फैल सकती

है—जिसका रंग ही अलग होगा। मकान सिर्फ ईंट–पत्थर की बेजान इमारत नहीं होती, यह हमारे बुजुर्गों की विरासत है, उनके सपने हैं—जिन्हें जीवंत रखना हमारी जिम्मेदारी है। विश्वास और सम्बन्ध कभी नहीं मरता, वह अजर और अमर है। परन्तु अविश्वास और एकल परिवार हमें कमजोर व शक्तिहीन बनाकर अंधे कुएँ में धकेल देगा। सम्बन्धों का गाढ़ा घोल बनाकर पी जाएँ। पश्चिमी देशों की तरह एकल परिवार में विश्वास नहीं करें।

—डा. राम बजाज

हाथी और महावत
Elephant & his Master

कीचड़ से निकलने का आसान रास्ता क्या है?

कोशल *नरेश प्रसेनजित के पास पायेक्का नामक एक परम बलशाली और अति बुद्धिमान हाथी था, जिसकी एक चिंघाड़ ही बड़ों–बड़ों से युद्ध का मैदान छुड़वा दिया करता थी। समय के साथ पायेक्का हाथी बूढ़ा हो चला और पुराना महावत भी सेवानिवृत्त होकर अपने गाँव में बुद्ध की शरण जा बैठा। बूढ़ा पायेक्का एक दिन पास के तालाब में नहाने गया और तालाब के कीचड़ में बुरी तरह जा फंसा। खाने का लालच दिया गया, डन्डे का डर दिखाया गया लेकिन गजराज उबरने की बजाए दलदल में कुछ और धंस जाता। खबर पाकर महाराजा अपने प्यारे हाथी को देखने आए तो पायेक्का की आँखों से बहते आँसू और उसकी दुर्दशा देखकर स्वयं के आँसू आ टपके। दुर्दशा की खबर पायेक्का के पुराने महावत तक जा पहुँची और वह तुरन्त घटनास्थल पर आ पहुँचा। महावत दलदल में फंसे असहाय हाथी को देखकर पहले तो खूब जोरों से हंसा फिर उसने राज–सैनिकों को युद्ध का बिगुल बजवाने का आदेश दिया। ज्यों ही रणभेरियाँ बजीं, पायेक्का अपनी खोई पुरानी आवाज में ऐसा चिंघाड़ा कि पूरी बस्ती और आसमान गूँज उठा और चिंघाड़ते हुए पायेक्का अपनी सहज पुरानी मस्ती और फुर्ती से दलदल से यूँ बाहर निकल आया ज्यों कभी फंसा ही न था। भीड़ में शामिल लोगों ने महावत को पूछा कि भला महाराजा के विपरीत महावत कीचड़ में फंसे अपने दुलारे हाथी की दुर्दशा देखकर दुःखी होने की बजाय क्यूँ हँसा ?*

और उसे दंड का प्रलोभन देने की बजाए उसने युद्ध के बिगुल क्यों बजवाए ? जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था !

महावत का जवाब था कि वह इसलिए हँसा कि उसने पाया कि अनेक युद्ध जीत चुका बलवान और अति बुद्धिमान हाथी भी कैसे अपना मूल स्वभाव और महान् अतीत भुलाकर एक छोटे से तालाब के कीचड़ में फंस कर रोने लगता है। और उसने बिगुल लकीर से हटकर इसलिए बजवाया कि हाथी को अपना मूल स्वभाव और जुझारू इतिहास एक बार फिर याद आ जाए तो फिर वह इस अपमानजनक दशा से एक झटके में उबर कर फुर्ती से दलदल से बाहर कूद निकल आएगा। और हुआ भी ठीक इसी प्रकार।

स्टूडेण्ट के अन्दर जो ऊर्जा शक्ति है, उसे धारा की तरह बहना चाहिए, जिसकी कोई निर्धारित दिशा और रास्ते हों। अध्ययन का लक्ष्य हो, वरना पढ़ाई के विषयों के विभिन्न तार आपस में उलझकर दलदल में फंस जायेंगे। दुःख की बात यह है कि अधिकतर नवयुवकों के तार अध्ययन की कला में उलझे हुए से हैं और अपने मूल स्वभाव और महान् आसान पढ़ाई के तरीकों को छोड़कर विभिन्न तरह के कोचिंग सेन्टर के बड़े–बड़े विज्ञापनों के भ्रम में इनके छोटे तालाब के कीचड़ में फंसकर अपनी दुर्दशा पर रोने लगते हैं।

प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती। स्टूडेण्ट अपनी मुश्किलों के बारे में किस तरह सोचते हैं, उसी से काफी हद तक यह तय होता है कि आप उनका सामना किस तरह करते हैं। अगर आपका रवैया यह होगा कि आप किसी बाधा को हटा नहीं सकते तो आप सचमुच उसे नहीं हटा पायेंगे। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि आप में उसे हटाने की क्षमता नहीं है। भले ही हाथी बूढ़ा हो चला होगा परन्तु बाधा हटाने की क्षमता उसमें थी। महावत की तरह अगर किसी विषय में आप पारंगत और विशेषज्ञ हैं, तो कामयाबी निश्चित ही आपके पास होगी। पैरों तले अगर रास्ते हों तो कोई भी मंजिल ज्यादा समय तक दूर नहीं रह सकती। नए सिरे से अध्ययन की ललक ही नवयुवकों को नम्बरों के शिखर पर पहुँचने का संकेत समझना चाहिए। क्योंकि अंकों की ललक कभी मरती नहीं। इन अंकों की ललकार से जो माँगों, वो तुम्हें दिया जायेगा। करिश्मा कभी भी बाहर से नहीं आता, भीतर ही होता है, क्योंकि दृष्टिकोण बदलने से दृश्य भी बदल जायेगा।

इनसान का दृष्टिकोण ही दृश्य के दृष्टिकोण को बदलता है।
—डॉ. राम बजाज

भागना एक आसान तरीका नहीं है
To runaway is not the easiest Method.

जब स्टूडेण्ट को कमजोर विषयों पर काबू पाना नामुमकिन लगने लगता है, तो पढ़ाई आधी–अधूरी छोड़ना और अध्ययन से भागना उन्हें सबसे आसान तरीका नजर आता है। यह बात हर परिवार, नौकरी और रिश्तों पर भी लागू होती है। विजेता चोट भले ही खा जाएँ, लेकिन मैदान नहीं छोड़ते। जिन्दगी में हमें किसी न किसी मोड़ पर हार का या फेल होने का सामना पड़ता है परन्तु हार जाने का मतलब यह नहीं है कि हम असफल हो गए हैं। हाँ यह जरूर है कि फेल होने वाले शख्स ने अध्ययन में कहीं बड़ी भारी कमियाँ रखी हों।

ज्यादातर इनसान और विद्यार्थी ज्ञान और प्रतिभा की कमी से नहीं हारते बल्कि इसलिए हार जाते हैं कि वे मैदान छोड़ जाते हैं—अपने कमजोर विषय पर ध्यान देना छोड़ देते हैं और समय की बर्बादी करते हैं। अध्ययनकाल में यह महसूस भी नहीं करते कि समय की बर्बादी आगे चलकर जीवन की बर्बादी है। अच्छे अंकों के पाने के रहस्यों में से एक यह भी है कि किसी कमजोर विषय पर टूटकर पड़ जाइये। इस तरह कमजोर विषय का हिस्सा बनने की बजाय आप उसके समाधान का हिस्सा बन जाते हैं और उस विषय की कमजोर कड़ियों को खूबियों में तबदील कर देते हैं।

सफलता उसूलों का नाम है और ये उसूल कुदरत के हैं। बदलाव कुदरत का उसूल है, जो कुदरत के नियमों के विरुद्ध नहीं रचाया जा सकता। हम इस बदलाव में या तो आगे बढ़ रहे हैं या पीछे हट रहे हैं या हम सिर्फ गोल–गोल घूमकर पूँछ के सिरे को ही पकड़ने की चेष्टा कर रहे हैं। हम काम बना रहे हैं या बिगाड़ रहे हैं। यह आपको सोचना है। हर तरक्की एक बदलाव है, लेकिन हर बदलाव एक तरक्की नहीं हो सकती।

चुनाव और प्राथमिकताओं का चुनाव क्या है ?
What is the selection of priorities ?

▣ ***बूढ़े*** *बलवान हाथी के भरसक प्रयत्न से तालाब के कीचड़ को उथल–पुथल करके उलटा तो जा सकता है—परन्तु फंसे हाथी*

को तालाब से बाहर निकालकर इतिहास नहीं रचा जा सकता, जब तक तजुर्बेकार महावत हाथी के दिमाग को decode करके रास्ता उसे नहीं दिखला दें। हाथी को रणभेरी बजाकर, मंजिल का एहसास करवा दें। महावत के पास केवल ताबीज ही नहीं बल्कि उसके दिमाग को activate करने का नायाब तोहफा भी था, जिसने अपनी बुद्धि से हाथी को बाहर निकलने का रास्ता दिखा दिया। यह नायाब तरीका सिर्फ गिने-चुने महावतों के पास ही मौजूद था। स्टूडेण्ट भी इस पुस्तक से गिने-चुने नायाब तरीकों का इस्तेमाल करके नम्बरों के शिखर पर पहुँच सकता है ।

स्कूली स्तर पर छात्र भावनात्मक एवं मानसिक रूप से उतने मजबूत नहीं होते। जरा सी नाकामयाबी उन्हें तोड़ देती है—जैसे बुढ़ापे ने बलवान हाथी को भी मानसिक रूप में तोड़ दिया। परन्तु सफलता मिलने पर वे अति आत्मविश्वासी हो जाते हैं। इस चक्कर में वे अपने मुख्य लक्ष्य से भटकने लगते हैं। ऐसे में छात्रों का हौसला बनाए रखने की जरूरत है।

जिन्दगी में हम हालात तो नहीं चुन सकते मगर अपना नजरिया तो जरूर चुना जा सकता है। चुनाव हमारा है, चाहे हम हालात पर विजय पाएँ अथवा हालात का शिकार बनें। खतरे का मतलब अलग-अलग इनसानों के लिए अलग-अलग हो सकता है और ट्रेनिंग व प्रैक्टिकल का नतीजा भी हो सकता है। एक तजुर्बेकार और नए सीखने वाले, दोनों पायलटों के लिए आकाश में जहाज उड़ाना खतरे से भरा है। लेकिन expert तजुर्बेकार पायलेट के लिए यह गैरजिम्मेदारी से भरा खतरा नहीं है। जिम्मेदारी भरा खतरा उठाना, प्रैक्टिकल, अध्ययन, आत्मविश्वास और काबिलीयत पर निर्भर करता है, जो इनसान को डर का सामना करने की हिम्मत देता है। जो आदमी कभी कोई काम नहीं करता, वह कोई गलती भी नहीं करता क्योंकि ज्यादातर इनसान यह समझ नहीं पाते कि कुछ न करना ही उनकी सबसे बड़ी गलती है, जबकि खतरा न उठाना भी सबसे बड़ा खतरा है। जो शख्स खतरे नहीं उठाता वह न तो कुछ करता है, न कुछ हासिल करता है और न ही कुछ बनता है। ऐसे इनसान अपने तयशुदा नजरिए की जंजीरों में बंधकर जिन्दगी के गुलाम बन जाते हैं और अपनी जीने की और अध्ययन की आजादी खो बैठते हैं।

पूँछ पर बैठा भाग्य नहीं हो सकता
Luck can not be at the top of Tail.

एक सुन्दर सफेद युवा बिल्ली अपनी पूँछ को पकड़ने के लिए गोलाई में चक्कर पर चक्कर लगा रही थी कि एक तजुर्बेकार काली–चितकबरी बिल्ली उसके पास पहुँची और उसे रोकते हुए पूछा, 'यह क्या बेवकूफी से गोल–गोल चक्कर लगा रही हो ?'

युवा बिल्ली थोड़ी थमी और उसे चुप कराते हुए समझाने की कोशिश की और कहा कि कामयाबी, भाग्य और अच्छे नम्बर उसकी पूँछ के सबसे ऊपरी छोर पर बैठे हैं और उसे सिर्फ इतना ही करना है कि अपनी पूँछ के आखिरी छोर को मुँह से पकड़ना है जिससे उसको कामयाबी की सारी खूबियाँ और खुशियाँ हासिल हो जायेंगी।

तजुर्बेकार बिल्ली बोली, 'मैं उम्र में तुमसे बहुत बड़ी नहीं हूँ मगर यह तो जानती हूँ कि सफलता, भाग्य और अच्छे अंक मेरी भी पूंछ के सबसे ऊपरी छोर पर हैं लेकिन मैं उन्हें पकड़ने की कोशिश नहीं करती।'

'क्यों, भला क्या तुम जिन्दगी में कामयाबी के साथ भाग्य नहीं चाहती ?' युवा बिल्ली ने आश्चर्य के साथ, उसकी आँखों में आँखें डालकर पूछा।

'निश्चित और आवश्यक तौर पर मुझे यह सब चाहिए, लेकिन इन्हें हासिल करने के लिए गोल–गोल घूमकर एक जगह चक्कर काटने की बजाय अपने स्तर पर आगे और आगे चलने का परिश्रम करती रहूँगी और जहाँ भी आगे चलकर पहुँचूँगी, खुशहाल जिन्दगी और कामयाबी मेरे साथ पीछे चली आएगी।'

'यह कैसे भला ?' युवा बिल्ली ने बड़े उत्साह से पूछा। 'मूर्ख नौजवान बिल्ली, मेरी पूँछ हर जगह मेरे साथ रहेगी, इसलिए मुझे उसे पकड़ने की जरूरत ही नहीं। सपनों को सच करने के लिए उसके पीछे दौड़ने की बजाय उसे हकीकत में बदलने के लिए लगातार आगे बढ़ने की जरूरत रहती है।' कहते हुए तजुर्बेकार

बिल्ली आगे बढ़ गई। नौजवान बिल्ली भी उसे आगे बढ़ता देख उसके पीछे–पीछे दौड़ पड़ी।

सफल होने के लिए हमें वजह और नतीजे के उसूलों को समझना और समझाना पड़ता है। दृढ़ विश्वास की कमी वाले इनसान किसी उसूल पर नहीं टिकते। सफलता किस्मत का नहीं, उसूलों का नाम है, जिसे आगे बढ़कर पाया जा सकता है। जो लोग इतिहास से सबक नहीं सीखते, उनकी बर्बादी निश्चित है। कुछ लोग जीवन गुजारते हैं, और सीखते हैं और कुछ सिर्फ जीते हैं और कभी नहीं सीखते। समझदार अपनी गलतियों से सीखते हैं, लेकिन बुद्धिमान इनसान दूसरों की गलतियों या कामयाबियों से भी सीखते हैं। ध्यान देवें कि हमारी जिन्दगी इतनी लंबी नहीं है कि हम सिर्फ अपनी ही गलतियों से सीखें।

हमारे जीवन में अंकों के पाने के अवसर सिर्फ विद्यार्थी जीवन में बाधाओं के रूप में आते हैं। यही वजह है कि बहुत से विद्यार्थी उन्हें आसानी से पहचान नहीं पाते। याद रखें, बाधा जितनी बड़ी होगी, अवसर उससे भी ज्यादा बड़ा होगा। बड़े अंकों के लिए बड़ी बाधा या कमजोर विषय के लिए कोई बाधा आपको एक उज्ज्वल भविष्य का न्योता दे रही है।

सुनहरी बोलती मछली और बुजुर्ग लेखक

एक बुजुर्ग इनसान मुम्बई के जुहूतट पर टहल रहा था कि उसने पतली आवाज में सुना, 'मुझे उठा लो, मुझे उठा लो।' वृद्ध आदमी ने इधर–उधर नजर दौड़ाई। कहीं कोई नहीं दिखा। वह आगे बढ़ने लगा तो फिर वही पतली सी आवाज आई, 'अन्तरराष्ट्रीय प्रेरक और लेखक, मुझे उठा लो।' इस बार उसने नीचे देखा तो कुछ दूर पर एक सुनहरे रंग की छोटी और सुन्दर मछली मुँह खोले एक बार फिर आवाज दे रही थी, 'हाँ, इनसान, मैं ही आवाज दे रही हूँ, मुझे उठा लो और मुँह के एक स्पर्श से मैं एक सुन्दर युवती में अवतार ले लूँगी।'

मछली को वृद्ध ने ध्यानपूर्वक देखा, वह उसकी ओर आशा भरी नजर से निहार रही थी। लेकिन बुजुर्ग इनसान जैसे ही फिर आगे बढ़ने के लिए कदम बढ़ाने की सोच ही रहा था कि सुनहरी मछली

ने एक बार फिर विनती भरे धीमें स्वरों में बोली, 'हाँ, यह सही है कि सुन्दर युवती के रूप में, शायद मैं आपके काम ज्यादा ना आ सकूँ परन्तु अन्तरराष्ट्रीय प्रेरक, जिस प्रेरणा से आज आपने युवा बच्चों और उनके माँ–बाप को अपनी किताबों और भाषणों के माध्यम से एक नई राह दिखाई है, क्या यह सम्भव नहीं है कि मैं भी मानव भेष में बदलकर—ऐसे ही काम करना आरम्भ कर सकती हूँ? ***आपने ही तो सिखलाया है कि नजर बदलने से नजरिया भी बदल जायेगा।'***

अन्तरराष्ट्रीय बुजुर्ग प्रेरक ने तुरन्त ही पलटकर सुनहरी मछली को हाथ में उठाया और मुँह के एक स्पर्श से उसे एक सुन्दर युवती के भेष में सामने पाया। युवती ने चरण स्पर्श करते हुए बुजुर्ग प्रेरक को धन्यवाद व कृतज्ञता प्रकट की और जिन्दगी भर बच्चों और उनके माँ–बाप के कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पण करने का वादा देकर–अपने गंतव्य स्थान की ओर चल पड़ी।

इस कहानी से यह सबक मिलता है कि सुनहरी मछली की भाषा बहुत गंभीर और अर्थपूर्ण थी। प्रेरक ने समझा कि भले ही हमारे जीवन में प्राथमिकताएँ बदलती रहती हैं, परन्तु मानव समाज के भले के लिए अगर सचाई को पूरी ईमानदारी के साथ अध्ययन, शिक्षा और अनुभव में उतारा जाय तो वह कितनी असरदार हो सकती है—इसका अन्दाजा तो एक लेखक या प्रेरक ही महसूस कर सकता है। जिसने बड़े कष्टों से अपना मुहावरा खुद गढ़ा हो।

अन्त में अगर आप भी इस स्टेज पर हैं कि इस परीक्षा के इम्तिहान में अपने भविष्य की दिशा तय करनी है तो यही वो मौका है जब आप अपने भविष्य के अंकों की योजना बना लें। इस किताब के पन्नों पर दर्शाए गए आसान तरीकों से किया गया अध्ययन का सफर एक ऐसे मोड़ पर जाकर रुक जाता है जहाँ से हर रास्ता सिर्फ और सिर्फ 80/100 मार्क्स के गलियारे में जाकर खत्म होता है। नम्बरों की योजना बनाने का गुर जानने वाला विद्यार्थी किसी दूसरे की योग्यता पर भरोसा नहीं करता, क्योंकि पढ़ाई सिर्फ उसी को करनी है और वो पढ़ाई करनी है जिसमें उसको माहिर बनना है। ध्यान देने की बात यह है कि आधार कोण (Best Angle) के बिना शीर्षकोण नहीं बनता।

परन्तु एकेडमिक (Acadamic) पढ़ाई किसी महान् व्यक्तित्व का विकास या

निर्माण नहीं कर सकती। व्यक्तित्व, अक्ल और काबिलीयत हमेशा जीवन ही बनाता है। पढ़ाई हम उस उम्र में करते हैं जिस उम्र में हम बेहतर समझदार और अक्लमंद नहीं होते। यही कारण है कि डाक्टरी की पढ़ाई करने के बाद आई.ए.एस. बनना पसन्द करते हैं, और इंजीनियर अपनी पढ़ाई के बाद एम.बी.ए. बनने की कोशिश करने लगता है। अच्छी एकेडमिक पढ़ाई जीवन में अच्छा हथियार तो हो सकती है लेकिन अगर यह नहीं है, तो आदमी बेकार है, ऐसी भी बात नहीं है।

लोग श्रेष्ठता या ऊँचा स्तर क्यों नहीं हासिल करते ? इसका सबसे बड़ा कारण है भविष्य की योजना में कमी। हमें अपनी नजर, जो मुमकिन है, उससे आगे ले जानी चाहिए। सलाह लेना है तो सिर्फ उन लोगों से लें जिन्होंने अपने जीवन में अध्ययन, शिक्षा और अनुभव में कामयाबी पाई है। असफल जीवन और असफलता का पुजारी किसे क्या रास्ता दिखाएगा—जिसके पास सफलता के नाम पर केवल असफलताएँ ही दर्ज है! आधी–अधूरी पढ़ाई वाले इनसान के पास पूरा प्रश्नपत्र का हल भी सामने हो तब भी किस काम का?

याद रखें—'Break The Rule' चलन के विरुद्ध करने की कोशिश करें और रुकावटों को तोड़ें।

नजरिया बदलने से नजर भी बदल जायेगी।

—डॉ. राम बजाज